|  |
| --- |
| 11. Juni 2023 |
| **10. Sonntag im Jahreskreis A** |
| Erste Lesung: Hos 6,3-6; Zweite Lesung: Röm 4,18-25; Evangelium: Mt 9,9-13 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 142, 1+2 | Zu dir, o Gott, erheben wir |
|  | GL 143, 1+3 | Mein ganzes Herz |
|  | GL 146, 1-4 | Du rufst uns, Herr, an deinen Tisch |
|  | GL 140, 1-3 | Kommt herbei |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 104 | Kyrie, eleison |
|  | GL 161 | Du rufst uns, Herr |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 105 | Gloria in excelsis Deo |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 50, 7-8.12-15 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 53, 1 | Hört auf die Stimme des Herrn |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 266, 4.5.7 | Bekehre uns, vergib die Sünde |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | Ruf: GL 174, 4 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Der Herr hat mich gesandt,* |
|  | *den Armen die Frohe Botschaft zu bringen* |
|  | *und den Gefangenen die Freiheit zu verkünden.* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 122 | Credo in unum Deum |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 281, 1+4 | Du rufst uns, Herr |
|  | GL 477, 1+2 | Gott ruft sein Volk zusammen |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 106 | Sanctus |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 107 | Agnus Dei |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 216, 1-3 | Im Frieden dein |
|  | GL 369, 2 | Du meines Herzens Herz und Sinn |
|  | GL 421, 1+2 | Mein Hirt ist Gott der Herr |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 456, 1+4 | Herr, du bist mein Leben |
|  |  |  |